हिन्दुस्तान
# फुरसत
रविवार 15 दिसंबर 2024
www.livehindustan.com

कादम्बिनी
कहानी
कुर्सियों के घेरे
...P-2

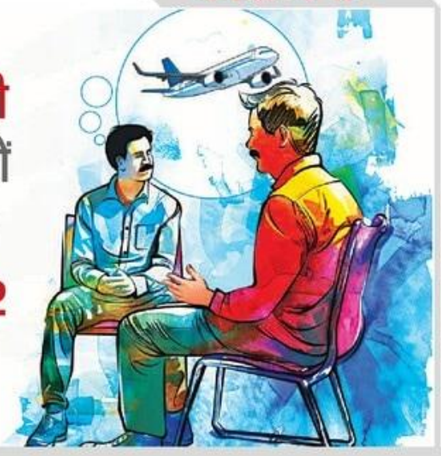

मनोरंजन
पूरा हुआ अल्लू अर्जुन का सपना
...P-4

# मुकद्दर की मरम्मत का बाजार

**एक ओर दुनिया अंतरिक्ष नापने में लगी है, तो दूसरी ओर हमारे युवा ज्योतिष की शरण ले रहे हैं। एक अध्ययन की मानें तो करियर के लिए 63 फीसदी अमेरिकी युवा रहस्य विद्याओं का सहारा ले रहे हैं। भारत के युवा भी पीछे नहीं हैं। यहां शायद ही कोई ऐसा मिले, जिसे ज्योतिष और रहस्य विद्याओं पर विश्वास ना हो। रहस्य और ज्योतिषीय विद्याओं की युवाओं में बढ़ती लोकप्रियता पर पूजा सिंह का आलेख**

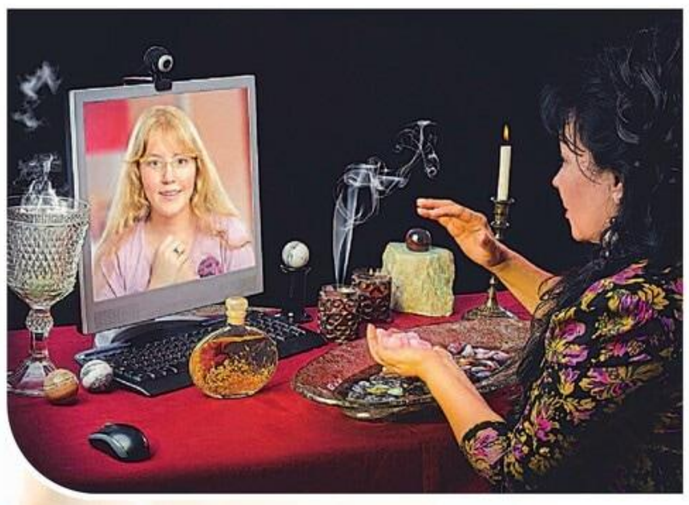

अयान देशपांडे अगले तीन सालों में यानी 30 की उम्र पार करने से पहले मुंबई में एक तीन बेडरूम का अपार्टमेंट खरीदना चाहते हैं, एक साथी ढूंढ़ने के साथ दुनिया घूमने के लिए पर्याप्त पैसा कमाना चाहते हैं। यह सब हासिल करने की शिद्दत इतनी है कि वे इसके लिए कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखना चाहते। शायद इसीलिए वह एक टैरो-कार्ड रीडर, एक अंकशास्त्री और एक ज्योतिषी पर हर महीने लगभग 15-20 हजार रुपये खर्च कर रहे हैं। एक साल पहले, अंकशास्त्री के कहने पर उन्होंने अपने नाम में एक अतिरिक्त 'ए' भी जोड़ा था, ताकि उन्हें सेहत और कारोबार में सफलता मिले। यदि उन्हें किसी विशेष कंपनी के स्टॉक में निवेश करना होता है, तो वे इसे बिना अपने ज्योतिषी से सलाह लिए नहीं करते। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डिग्री ले चुके देशपांडे को अपने सितारों का नियमित हाल जानने का रुझान 2021 से शुरू हुआ, जब एक दोस्त ने उन्हें ऑनलाइन ज्योतिषी से परामर्श करने के लिए कहा। उस दौरान वह बेहद तनाव में थे, क्योंकि कोविड के कारण उन्होंने अपने परिवार के दो सदस्यों को खोया था और अपने बचपन के प्यार से जुदा हो गए थे। देशपांडे कहते हैं, 'मैं उस समय कुछ भी करने को तैयार था, ताकि मुझे कुछ उम्मीद महसूस हो और उस एक घंटे के ज्योतिषीय सेशन ने मुझे भरोसा दिलाया कि मेरे दिन अच्छे हो सकते हैं।' रात में सोने से पहले मंत्र जप करना, सुबह उठना, ध्यान लगाना, अपने इनबॉक्स में विभिन्न ज्योतिष वेबसाइटों से ज्योतिष भविष्यवाणी पढ़ना, फिर दिन की शुरुआत करना...अब इसी रूटीन के आदी हो चुके हैं वह, जिनको कभी इन सब चीजों में विश्वास ही नहीं था। पर, यह अकेले अयान की कहानी नहीं है, बल्कि कई लोगों की है।

## कैसी-कैसी विद्या

**मैनिफेस्टेशन**
यह तकनीक सोशल मीडिया में छाई हुई है। इसका उद्देश्य, आप जो हासिल करना चाहते हैं उस पर अपने विचारों और ऊर्जा को केंद्रित करके उसे आप अपनी वास्तविकता बना सकते हैं।

**मीडियमशिप**
यह भी गुप्त विधा है, जो कथित रूप से आत्माओं की दुनिया से संवाद करके इस जन्म की समस्याओं के कारण जानने जैसे समाधान बताती है। जैसे शादी विफल हो जाने के पीछे पिछले जन्म के प्रेमी का अभिशाप आदि।

**थीटा हीलिंग थेरेपी**
इसमें ध्यान के माध्यम से आप अपने अवचेतन मन से बात करने में सक्षम बनते हैं। यह तकनीक आपको तनाव, शारीरिक बीमारियों और चिंताओं को दूर करने में मदद करती है।

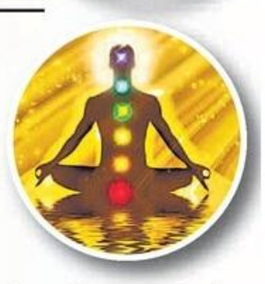

### किस्मत की बढ़ती बाजीगरी

मुझे किसे नौकरी पर रखना चाहिए? क्या मैं अमीर बन जाऊंगा? क्या मुझे मेरा प्यार मिलेगा? मेरे लिए किस चीज का बिजनेस करना ज्यादा फायदेमंद रहेगा। इन सवालों के साथ युवाओं की रुचि ज्योतिष समेत अन्य गुप्त विद्याओं में बढ़ रही है। एक सर्वे की रिपोर्ट की मानें तो जेनरेशन जेड और मिलेनियल्स में से लगभग 80 फीसदी युवा ज्योतिष में विश्वास करते हैं। अब मसूरी की आर्किटेक्ट मनीषा वालिया को ही ले लीजिए, जो पिछले दो साल से ज्योतिषी व टैरो कार्ड रीडर से सलाह ले रही हैं। उनका एक ही सवाल है-'क्या उन्हें कभी प्यार मिलेगा?' वहीं 26 वर्षीय तनिष्का वत्स, जो पीआर पेशेवर हैं, सप्ताह में तीन बार एस्ट्रोटॉक में लॉग इन करती हैं, वह जानना चाहती हैं कि जीवन किस ओर जा रहा है। वह अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए लगभग 4-5 हजार रुपये प्रति सप्ताह खर्च करती हैं। जाहिर है भविष्य बताने का व्यवसाय तेजी से बढ़ रहा है। इस बात की पुष्टि मार्केट रिसर्च फर्म आईमार्क ग्रुप की रिपोर्ट भी कर रही है, जिसके मुताबिक भारत के ज्योतिष और अध्यात्म का बाजार पिछले साल 60 बिलियन डॉलर था, जिसमें वर्ष 2024-32 के दौरान 8.82% की सालाना वृद्धि होने की संभावना है।

### ऑनलाइन, कुछ भी पूछिए

चाहे वह एस्ट्रोटॉक, एस्ट्रोसेज, एस्ट्रोयोगी जैसे एस्ट्रो टेक मंच हों या फिर आस्था आधारित सेवाएं प्रदान करने वाले व्यक्ति हों, रत्न और क्रिस्टल वर्धित आभूषण, एक्सेसरीज, मोमबत्तियों को बेचने वाले ब्रांड हों, सभी 20-30 की उम्र के ग्राहकों को अपने साथ जोड़ने का दावा कर रहे हैं। तभी तो ज्योतिष व्यवसायी अपनी सेवाओं को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से विस्तार देने में लगे हुए हैं, ताकि तकनीक प्रेमी युवाओं के बीच उनकी पहुंच आसानी से हो सके।
यह सुलभता ही है कि अब आप एक एआई-जनरेटेड टैरो कार्ड रीडर से सलाह ले सकते हैं कि आपके क्रश के मन में आपके लिए कोई खास जगह है या नहीं। या एक क्रिस्टल-चार्ज्ड नेकलेस, जो आपको पहले जॉब इंटरव्यू में सफल होने में मदद कर सकता है। एक इंस्टाग्राम रील आपको यह समझने में मदद कर सकती है कि आपके नाम में एक अक्षर बदलने से सोशल मीडिया फॉलोअर्स कैसे बढ़ सकते हैं।

### चिंतित पीढ़ी का सहारा

ज्योतिष से संबंधित साइट्स पर लोगों की बढ़ती संख्या को देख कर ऐसा लग रहा है, जैसे लोग खुद से ज्यादा उच्च शक्ति में विश्वास करने लगे हैं। या यों कहें कि रहस्य विज्ञान युवाओं के लिए आत्म-देखभाल का स्रोत बनता जा रहा है। इस बाबत एस्ट्रोयोगी की संस्थापक मीना कपूर कहती हैं, 'युवा पहले भी भविष्य जानने के लिए उत्सुक थे। पैसा, प्यार, शादी..., यही मुद्दे आज की पीढ़ी के माता-पिता और दादा-दादी को चिंतित करते हैं। अब केवल इतना अंतर है कि युवा पीढ़ी छोटी-छोटी चीजों के उत्तर जानना चाहती है। जैसे कि मेरा साथी मेरे बारे में क्या सोचता है? मेरा बॉस मेरे विचारों को क्यों स्वीकार नहीं कर रहा है? क्या मुझे अपनी नौकरी बदलनी चाहिए। यह ऐसा है, जैसे जब भी चीजें थोड़ी कठिन होती हैं, तो गुप्त विज्ञान उनकी बैसाखी बन जाता है। मेरे ऐप पर मौजूद ग्राहकों में 18-25 के युवा ज्यादा हैं।'
दिल्ली की टैरो रीडर स्नेहा जैन कहती हैं कि उनके पास आने वाले 99 प्रतिशत लोग नाखुश होते हैं और वे कोई समाधान चाहते हैं। उनको सुनकर ऐसा लगता है, जैसे दुनिया अधिक संवेदनशील हो गई है। जिसका अर्थ है कि हर कोई भावनात्मक रूप से कमजोर है। हालांकि वे भूल रहे हैं कि 70 फीसदी उथल-पुथल आपके ग्रह के अनुसार हो सकती है, लेकिन 30 फीसदी आपके द्वारा किए गए कर्म हैं, जो आपके जीवन को आकार देते हैं। वहीं दिल्ली स्थित ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ ऑकल्ट साइंस के संस्थापक और अध्यक्ष गुरुदेव इंद्रजीत कश्यप कहते हैं, 'आज की पीढ़ी में इच्छाएं अधिक हैं और धैर्य कम; यह 'चिंतित पीढ़ी' है। और जब भी किसी को जीवन के मूर्त पहलुओं में शांति मिलती है, तो वह बाहर देखना शुरू कर देता है, यह मानव स्वभाव है।'

### इंटरनेट से मिली संजीवनी

टैरो कार्ड, मीडियमशिप, अंकज्योतिष बेशक अभी चलन में हों, पर ये सदियों पुरानी विधाएं हैं। सूर्य आधारित राशि भविष्यवाणियां अभी भी समाचार पत्र-पत्रिकाओं, ऑनलाइन वेबसाइट्स आदि में जमकर छपती हैं। अभिनेता शाहरुख खान के जन्मदिन पर समाचार चैनल लाइव टीवी पर एक पंडित को यह बताने के लिए लाते हैं कि यह साल शाहरुख के लिए क्या लेकर आएगा। यहां तक कि मशहूर हस्तियां भी अधिक प्रसिद्धि की उम्मीद में अपना नाम बदलती हैं। दरअसल सोशल मीडिया ने सभी रहस्यमय चीजों को ग्लैमरस बनाने में मदद की है। डिजिटल मंच के उदय ने ज्योतिष और भाग्य-विद्या को और अधिक सुलभ बना दिया है। जैसे किसी जोड़े को अब यह जानने के लिए कि वे एक-दूसरे के लिए बने हैं या नहीं, किसी हस्तरेखा विशेषज्ञ के पास जाने की जरूरत नहीं। बस ऐप डाउनलोड करें, विवरण दर्ज करें, कुछ ही मिनटों में आपको जवाब मिल जाएगा। मतलब, अपने सितारों, ग्रहों व ऊर्जाओं के आधार पर आप हर तरह के सवालों के जवाब पा सकते हैं। बस कुछ समय और बहुत सारा पैसा निवेश करें। यहां किसी भी इच्छा के लिए कुछ न कुछ है। हालांकि ये चीजें काम करेंगी या नहीं, यह आपके विश्वास पर निर्भर करता है।

mint

घुमक्कड़ी

# घूमिए राजस्थान के खजुराहो में

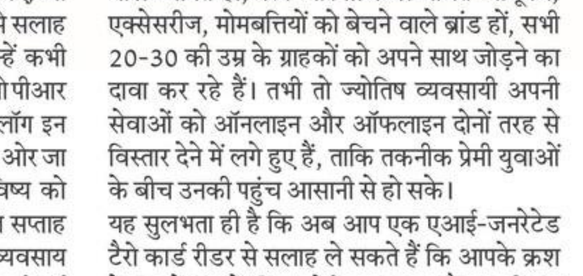

यह मौसम है राजस्थान में मौजूद उन जगहों को खोजने का, जहां गर्मियों में जाने की सोच ही नहीं सकते। एक ऐसी ही जगह है ओसियां, जो जोधपुर में स्थित एक शहर है। यह जगह रेगिस्तान कैंपिंग के लिए खास प्रसिद्ध है। इसके अलावा यह जगह हिंदू और जैन मंदिरों के समूह का एक ठिकाना भी है, जिसकी वास्तुकला आपको हैरान कर सकती है। विभिन्न पौराणिक कथाओं को दर्शाती यहां की अद्भुत मूर्तियां किसी का भी ध्यान आकर्षित कर सकती हैं। इसलिए इसको 'राजस्थान का खजुराहो' भी कहा जाता है। यह प्राचीन रेगिस्तानी शहर आपको

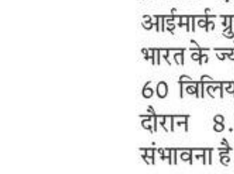

### ये भी जानिए

- इस शहर में कई मंदिर हैं, जिनमें सच्चिया माता मंदिर, सूर्य मंदिर और भगवान महावीर को समर्पित जैन मंदिर शामिल हैं। ये मंदिर अपनी जटिल नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।
- सुबह की जीप सफारी और सूर्यास्त के समय ऊंट सफारी का आनंद लें, जो आसपास के गांवों, खेतों और थार रेगिस्तान से होकर गुजरते हैं।
- यह शहर रेत के टीलों से घिरा

### कब व कैसे जाएं

यहां जाने का सबसे अच्छा समय नवंबर से मार्च तक है। लेकिन अगर यहां जीप सफारी करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छा समय सुबह 9 से 11 बजे तक का होता है या फिर दोपहर 4 से 6 बजे तक भी जीप सफारी कर सकते हैं।
जोधपुर हवाई अड्डा, यहां का निकटतम हवाई अड्डा है और जोधपुर रेलवे जंक्शन, यहां

उम्मीद के रंग

# अटक तो नहीं गए अपनी सोच में

**बहुत ज्यादा सोचना एक ऐसी आदत है, जो हमें निर्णय लेने से रोकती है। हमारी चिंता को बढ़ाती है और हमारे समग्र स्वास्थ्य को बाधित करती है। इससे कैसे निपटें, बता रही हैं हमारी विशेषज्ञ**

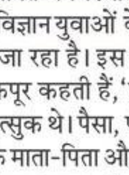

डॉ. करिश्मा आहूजा
लॉ ऑफ अट्रैक्शन हो'ओपोनोपोनो विशेषज्ञ

**ज्यादा सोचना,** हमें चुनाव करने, कार्रवाई करने या आगे बढ़ने से रोक सकता है। ऐसे में ये कुछ अभ्यास आपको अत्यधिक सोचने से मुक्त होने और विचारों को कार्य में बदलने में मदद करेंगे, जैसे-

### माइंडफुलनेस को अपनाना

ज्यादा सोचना अकसर अतीत या भविष्य के प्रति जुनून से आता है। इस स्थिति में हम पिछली गलतियों को दोहराते हैं या भविष्य की संभावनाओं के बारे में चिंता करते हैं। पर, माइंडफुलनेस का अभ्यास, वर्तमान क्षण में पूरी तरह से मौजूद रहने के बारे में है। यह एक ऐसा अभ्यास है, जो हमें ज्यादा सोचने के चक्र को तोड़ने में मदद कर सकता है। इसको अपनाकर, इस बात पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं कि करने के बजाय, अपने काम को छोटे-छोटे चरणों में तोड़ना शुरू करें। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी बड़े प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं, तो आप दैनिक या घंटे के हिसाब से भी अपना लक्ष्य बना सकते हैं। इससे किसी बड़े पहाड़ पर चढ़ने का अहसास दूर होगा। यह आदत आपको नियंत्रण और प्रगति की भावना देगी।

### आत्म-करुणा का अभ्यास

आत्म-करुणा का मतलब है अपनी खुद की खामियों को स्वीकार करना और संघर्ष या असफलता के क्षणों में खुद पर दया करना। स्वयं के प्रति दयालु होकर, हम असफलता के डर को कम कर सकते हैं, क्योंकि यह डर ही अकसर ज्यादा सोचने को जन्म देता है। हम खुद को याद दिला सकते हैं कि गलतियां करना, हमारी यात्रा का हिस्सा हैं, हमारे विकास और सीखने के लिए आवश्यक हैं। इसलिए अगली बार जब आप खुद को लेकर जरूरत से ज्यादा सोचने लगें, तो खुद के प्रति दयालु होने के लिए कुछ समय निकालें। अपने

सकता है, क्योंकि जब हम अत्यधिक सोचने लगते हैं, तो अकसर हम नकारात्मक बातों पर ध्यान केंद्रित करने लगते हैं। लेकिन कृतज्ञता हमारा ध्यान सकारात्मकता की ओर स्थानांतरित करने में मदद करती है। यह चिंता और तनाव को कम करने में मदद कर सकता है। इसलिए अपने दिन की शुरुआत या अंत एक सरल कृतज्ञता अभ्यास के साथ करने का प्रयास करें। रोजाना तीन चीजें लिखें, जिनके लिए आप आभारी हैं। लिखिए कि आप उनके प्रति आभारी क्यों हैं? इस तरह अपना ध्यान क्या गलत हो सकता है से हटाकर क्या सही हो रहा है, पर जाएगा और स्थितियों से निपटना और सही निर्णय लेना आसान हो जाएगा। पर, याद रखें, अत्यधिक सोच पर काबू पाना छोटे-छोटे कदमों की

अपने साहित्यिक-सांस्कृतिक कलेवर के लिए प्रसिद्ध हिंदुस्तान टाइम्स समूह की हिंदी भाषा की विशिष्ट मासिक पत्रिका 'कादम्बिनी' का साठ वर्षों से अधिक का गौरवशाली इतिहास रहा है। इस यशस्वी परंपरा को पुनः आपके सामने हिंदुस्तान के फीचर परिशिष्ट के अंतर्गत 'कादम्बिनी' नाम से आरंभ किया जा रहा है। इसमें पत्रिका के पुराने अंकों की सामग्री होगी, जिससे पुराने दौर की 'कादम्बिनी' की झलक आज के नए पाठक भी पा सकेंगे। - संपादक

# कुर्सियों के घेरे

इलस्ट्रेशन: यशवंत नामदेव

**कहानी**

अखिलेश तिवारी

आज-जैसी उलझन और बेचैनी उसे कभी महसूस नहीं हुई। पिछले सप्ताह जब उसने डाक में वह सरकारी पत्र, जो भारत सरकार से सभी राज्य-प्रशासनों को भेजा गया था, देखा था। उसके मन में तीव्र लालसा जाग्रत हुई थी। हारवर्ड विश्वविद्यालय में नौ मास का कोर्स और उसके बाद अमरीका, इंग्लैंड व यूरोप में तीन मास का भ्रमण, सब सरकारी पैसे से। सोचकर ही वह रोमांचित हो उठा था। ...इससे पहले वह विदेश नहीं गया था, पर अपने परिचितों, विदेशी पत्र-पत्रिकाओं और फिल्मों के द्वारा जो कुछ उसने देखा-सुना था, उसने उसकी कल्पना में एक रेखाचित्र अंकित किया था, जो सहसा आज साकार हो उठा था। जिस विभाग से वह पत्र आया था, वहां के एक उप-सचिव से उसकी पहचान थी। उसने तुरंत टेलीफोन मिलाया, 'नमस्कार, मैं मेहता बोल रहा हूं। पहचाना...?'

'आपको कैसे भूल सकता हूं...।' उत्तर मिला।

'बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई। लगता है किसी प्रोग्राम का निमंत्रण भिजवाना पड़ेगा।'

'तब तो अवश्य आऊंगा, बताओ कैसे याद फरमाया?'

'यार, यह हारवर्ड या विलियम्स क्या बला है? हमारे मुख्य सचिव बहुत पीछे पड़े हैं। बताओ, बूढ़े तोते क्या पढ़ेंगे! पर उनकी तो जिद-सी है। हमारा नाम ही रिकमेंड करने पर तुले हैं।' उसने बनावटी उदासीनता में झूठ ही कह दिया था।

'हारवर्ड फेलोशिप! मौका है तो मत चूको।'

'मैं तो अधिक इच्छुक नहीं हूं, पर चीफ सेक्रेटरी तो आखिर बॉस हैं, उन्हें कैसे नाराज कर सकता हूं। अच्छा, सेलेक्शन क्या बहुत कठिन है?' धीरे-धीरे वह असली तथ्य पर आ रहा था।

'हां, सेलेक्शन इज टफ...।'

'पर, आप कुछ गुरुमंत्र बताइए...।'

'गुरुमंत्र क्या... जिसका जितना जोर पड़ता है, उतने ही उसके चांसेज ब्राइट रहते हैं।' वह कुछ अंदरूनी तरकीब जानने की कोशिश में था, पर बात बनी नहीं। दूसरे दिन उसने मुख्य सचिव से मिलने की योजना बनाई। ...दफ्तर से घर आने के बाद उसने कार ली और मुख्य सचिव के बंगले पर पहुंच गया। पता चला अभी वे घर नहीं पहुंचे हैं। फिर बरामदे में पड़ी आराम कुर्सी पर बैठ गया। चयन सचमुच कठिन है, वह सोच रहा था। सभी राज्यों और केंद्रीय विभागों से सैकड़ों अधिकारियों के नाम आएंगे और केवल दो व्यक्ति चुने जाएंगे। अब तक उसने अनेक कठिन प्रतिस्पर्धावाले चयनों में सफलता प्राप्त की है, अन्यथा एक सहायक सूचना-अधिकारी की नौकरी से प्रारंभ कर वह भारतीय प्रशासन सेवा में कैसे घुस सकता था! उसने जीवन में एक सिद्धांत अपनाया था- अनुकरण का। बॉस को खुश करने का इससे बढ़कर कामयाब नुस्खा कोई नहीं हैं। मंत्रीजी को लंबे बाल रखने का शौक था। कुछ लोगों का कहना था कि मंत्रीजी बाल कटाने के पैसे बचाते थे। पर, इस आलोचना के बावजूद उसने अपने बाल खूब बढ़ाए। मंत्रीजी को ज्योतिष व हस्त रेखाशास्त्र में गहरी दिलचस्पी थी। अतः उसने चुपके-चुपके वाराणसी के एक ज्योतिषी से ज्योतिष की दो मास तक शिक्षा ली थी। अपनी इस विद्या के सहारे वह शीघ्र ही मंत्रीजी का विश्वासपात्र बन बैठा था। कुछ ही समय में सहायक सूचना अधिकारी से सूचना अधिकारी, फिर सहायक निदेशक सूचना विभाग का पद उसे मिल गया था। उसके साथी ईर्ष्या से जल-भुन गए थे, मंत्रीजी मुख्यमंत्री बन गए। फिर क्या था, उसके पौ बारह! उसे विभाग का उप-निदेशक बना दिया गया।

वह आराम कुर्सी पर बैठा अपने अतीत में डूब गया था। तभी मुख्य सचिव की कार के हॉर्न से उसका विचार क्रम टूटा। वह शीघ्र उठकर कार के पास पहुंचा, झट से दरवाजा खोला। मुख्य सचिव थके हुए थे, अतः उसकी उपस्थिति से वे विशेष प्रसन्न नहीं हुए। 'कहिए, कैसे आना हुआ?' औपचारिक तौर पर उन्होंने पूछा और बंगले में घुसने लगे। 'सर, आप थके हुए लग रहे हैं। कल ऑफिस में बात कर लूंगा।' उसने अत्यंत विनम्रता से कहा।

'कल तो कई मीटिंग्स लगी हैं। शायद समय न मिले...। कोई विशेष बात है मेहता?'

'बस आपके दो मिनट लूंगा।'

'अच्छा जरा रुको, मैं आता हूं।' वह फिर आराम कुर्सी पर बैठ गया। मुख्य सचिव को आने में देर लग रही थी। अतः अतीत की लड़ी फिर एक बार जुड़ गई। उसके उप-निदेशक बनने के बाद ही मुख्यमंत्रीजी बदल गए। उस विभाग का कार्य एक अन्य मंत्री जी को सौंपा गया। उन मंत्रीजी से पहली भेंट तो बड़ी खतरनाक साबित हुई। उससे ईर्ष्या करनेवाले साथियों ने शायद मंत्रीजी को उसके विरुद्ध भड़का रखा था। 'मेहताजी, आप वेशभूषा से तो राजनीतिक नेता या कवि लगते हैं। सरकारी नौकरी के ढांचे में कैसे बंधे हुए हैं?' उन्होंने व्यंग्यात्मक ढंग से चोट की थी। वह हतप्रभ हो गया था। फिर भी उसने कहा था, 'सर, क्षमा करें। भूतपूर्व मुख्यमंत्री जी का मत था कि आम जनता के लिबास में सरकारी अफसर को अपने कर्तव्य-निर्वाह में अधिक सुविधा रहती है। उसे जनता का विश्वास प्राप्त होता है...।'

'पर, इस लंबी केश-राशि से भी आम जनता का कोई विशेष संबंध है?'

उसी दिन शाम को उसने अपने परिश्रम व सेवा से पाले बाल निर्मोह कटा दिए थे। नए मंत्रीजी धोती-कुर्ता पहनने के शौकीन नहीं थे। चार बड़ी जेबोंवाली बुशर्ट और पतलून उनका प्रिय लिबास था। अतः उसने भी कुर्ता-धोती का त्यागकर खादी बुशर्ट और पैंट को अपना लिया था। नए मंत्रीजी लंबे बालों के स्थान पर चौड़ी घनी मूंछें रखे थे। और जब तक उसकी मूंछों के बाल बड़े होकर मंत्रीजी की मूंछों के आकार तक पहुंचते, उसका स्थानांतरण कर दिया गया। उसे बड़ी चोट पहुंची थी, पर विवश था। मंत्रीजी से दोबारा सान्निध्य का अवसर उसे तब मिला, जब वे उसके शहर में दौरे पर आए। उसकी घनी, तरीके से तराशी हुई मूंछें देखकर मंत्रीजी अत्यंत हर्षित हुए थे। मृदु मुसकान बिखेरते हुए वे बोले थे, 'मि. मेहता, आप अब तक प्रतीक्षा कर रहे थे। अब तो दस बज रहा है।'

'जी कोई बात नहीं। कौन आप रोज-रोज इधर पधारेंगे...' बात पर बात चलती गई और अंत में ज्योतिष और हस्तरेखा की चर्चा छिड़ गई। फिर क्या था, उसने मंत्रीजी की दाहिनी हथेली थाम कर रात के सन्नाटे में इतनी भविष्यवाणियां कर डालीं कि यदि मंत्रीजी भारत के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बनने का भी स्वप्न देखने लगे हों तो आश्चर्य की बात नहीं! इसके दो मास बाद ही वह फिर उप निदेशक होकर मंत्रीजी के पास पोस्ट हो गया था। उसी दौरान उसने अपने जीवन की सबसे बड़ी सफलता प्राप्त की। मुख्य-सचिव लगभग आधे घंटे बाद बाहर निकले और उसे अपने अध्ययन कक्ष में ले गये। 'सॉरी मेहता! कुछ देर लग गई। बोलिए, क्या प्रॉब्लेम है आपकी?'

'प्रॉब्लेम कोई नहीं है सर। हारवर्ड के लिए कुछ नाम मांगे गए हैं। मैं भी सोच रहा हूं...'

'ओह हारवर्ड! ... कब नाम मांगे गए? आप सब क्वालीफिकेशंस पूरी करते हैं?' टेढ़ा सवाल था। परोक्ष योग्यताओं में से केवल एक-दो को छोड़कर वह कोई भी पूरी नहीं करता था। फिर भी उसने कहा, 'मैंने बहुत ध्यान से तो नहीं देखा है सर,लेकिन...।'

'कोई बात नहीं। आप एप्लाई कीजिए, मैं स्ट्रांगली रिकमेंड कर दूंगा।'

'सर आप मुनासिब समझें तो एलजी से भी जिक्र कर दें...।'

'मैं उनसे भी कह दूंगा। वैसे एहतिहातन तुम भी उनसे मिल लो। अगर वह जोर लगा दें तो अवश्य काम बन जाएगा।'

उस रात वह काफी प्रसन्नचित्त घर लौटा। दूसरे दिन उसने अपना बायोडाटा तैयार कराया और मुख्य-सचिव के पास भेज दिया। अब एलजी के पास तक पहुंचने की बात थी। एलजी से उसकी केवल जान-पहचान भर थी, निकटता नहीं। छह बजे शाम राजनिवास में उनसे मिलना था। जितनी बार उसने एलजी को देखा था, उनकी पोशाक अजीबोगरीब थी। वह बुशर्ट-पतलून हों या गलाबंद कोट-पतलून, खादी की टोपी अवश्य लगाते थे। यह पोशाक जुटाने या पहनने में उसे कोई कठिनाई नहीं थी, लेकिन मुख्य-सचिव को (जो पाश्चात्य पोशाक के प्रेमी थे) पता लगने की आशंका थी। फिर भी उसने यह खतरा उठाना मुनासिब समझा। उसने ऊनी सफेद गलाबंद कोट, काली पतलून व टोपी खरीदी, राजभवन पहुंच गया। राजमहल में घुसा तो उसे लगा कि आज माहौल कुछ बदला हुआ है। वहां एक व्यक्ति टेलीफोन के पास बैठा था। फोन के पास बैठा व्यक्ति उसे पहचान गया। उसने उठकर अभिवादन किया।

'गुप्ता साहब कहां गए हैं?' उसने एलजी के सचिव के बारे में जानकारी मांगी।

'सर! मैं कुछ बतला नहीं सकता। शायद एलजी साहब के साथ ही गए हैं!

'कब तक आएंगे?' वह आशंकित हो उठा।

'सर! कुछ कह नहीं सकता?'

'क्या मतलब, कोई खास बात है क्या?'

'सर! सुना है नए एलजी साहब कल से चार्ज ले रहे हैं और यह साहब छुट्टी पर जा रहे हैं।' उसका माथा ठनक गया। वह काफी देर तक प्रतीक्षा करता रहा, पर एलजी साहब के वापस आने का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ा। हारवर्ड विश्वविद्यालय, न्यूयार्क, लॉस एंजिलेस, लॉस वेगास, लंदन, पेरिस, रोम सभी मशहूर रंगीन शहर, जो उसकी पकड़ में आ गए थे, लग रहा था अब हाथ से छूटे जा रहे हैं। क्या कोई युक्ति अभी शेष है? इसी का उत्तर पाने के लिए वह पागल की तरह अपने दफ्तर के कमरे में चहलकदमी कर रहा है। उलझन, उद्विग्नता और परेशानी का लबादा ओढ़े!

> वह आराम कुर्सी पर बैठा अपने अतीत में डूब गया था। तभी मुख्य सचिव की कार के हॉर्न से उसका विचार क्रम टूटा। मुख्य सचिव थके हुए थे, अतः उसकी उपस्थिति से वे विशेष प्रसन्न नहीं हुए।

**यादें**

# जिंदगी और मौत के बीच एक चट्टान का फासला था

हिंदी सिनेमा की सबसे बेहतरीन अदाकाराओं में से एक वहीदा रहमान ने अपने पांच दशक से ज्यादा के करियर में कई हिट फिल्में दी हैं। और आज भी वो भारतीय सिनेमा से जुड़ी हुई हैं। यहां पेश है उनके जीवन से जुड़े कुछ अनकहे किस्से

बचपन से ही औरतों को बुरके में देखती आ रही थी और हमेशा बड़ा अटपटा-सा लगता रहा। वह दिन भी आया, जब मुझे बुरका पहनना पड़ा। बुरका पहन कर कुछ अभ्यास की नीयत से मैं दो कदम ही बढ़ी थी कि मेरा माथा दरवाजे से टकरा गया, बुरके के निचले हिस्से पांव में फंस गए और मैं जमीन चूमने लगी। पहली बार ही इस बुरके ने घुटने और माथे की चोट दी, जिसकी सिहरन बरबस ही मुझे उस घटना की याद दिलाती रहती है।

महाबलेश्वर गई थी फिल्म 'एक फूल चार कांटे' की शूटिंग के सिलसिले में। जहां शूटिंग हो रही थी, वहां से करीब दस-बारह मील दूर आर्थर शीट नाम की एक जगह है। सुना था कि बड़ी लुभावनी जगह है, इसलिए शूटिंग से मौका मिलते ही अपनी बड़ी बहन के साथ गाड़ी में बैठ चल पड़ी। आर्थर शीट अगले मोड़ से गाड़ी दूसरी ओर मोड़नी है। अचानक ही वह मोड़ सामने पा दीदी ने एक झटके के साथ ब्रेक लगा दिया। पर उस ब्रेक के झटके का असर था कि न तो ब्रेक ने अपना काम किया, न ही हमारी गाड़ी सही मोड़ पर मुड़ सकी। हमारी गाड़ी उस ढलवां रास्ते पर फिसल चली, जिस पर हमें नहीं जाना था। गाड़ी बढ़ती जा रही थी।

अचानक मेरे दिमाग में खयाल आया कि कूद कर गाड़ी को रोक लूं और दूसरे ही क्षण मैं बिना कुछ सोचे कूद पड़ी। अपने हाथों से गाड़ी को पकड़ कर रोकना चाहा। भय के मारे चीख भी नहीं निकल रही थी मेरे मुंह से। दीदी का क्या होगा, इस सवाल का कोई जवाब नहीं था मेरे पास। आगे चलकर वह ढलवां रास्ता और भी ढलवां हो गया, इसलिए गाड़ी की चाल खुद-ब-खुद और तेज हो देखा, तो अचानक ही आंसू ढुलक पड़े, दुख के नहीं, सुख के। देखा, कुछ दूर पर ही गाड़ी खड़ी थी और दीदी दौड़ी आ रही थीं मेरी ओर। मुझे अपनी चोट का खयाल न रहा और मैं दौड़ कर दीदी से लिपट गई। उसके बाद गाड़ी पर नजर पड़ी, तो सामने एक साधारण चट्टान को देखा, जिससे टकरा कर गाड़ी रुक गई थी। मुझे लगा जैसे जिंदगी और मौत के बीच वह चट्टान आ गई हो।

**गाय ने दौड़ाया मुझे**

फिल्म 'काला बाजार' की शूटिंग होनी थी। जैसी कि मुझे आउटडोर के वक्त दूर-दूर तक घूमने की आदत है। उस वक्त भी दीदी के साथ घूमती-घूमती मैं बहुत दूर निकल गई थी। तभी हमने देखा, सामने से गायों का एक झुंड चला आ रहा है। दूर से आती गायों का वह झुंड बहुत भला लगा मुझे, तभी मेरी निगाह एक गाय पर पड़ी, जो मेरी ओर बड़ी तेजी से बढ़ती आ रही थी। समझ में कुछ नहीं आ रहा था, तभी मेरी निगाह अपने कोट पर पड़ी, जो लाल रंग का था। फौरन ही मेरे दिमाग में यह बात कौंधी कि गहरे रंगों को देखकर जानवर भड़कते हैं। मुझे असलियत भांपने में एक क्षण भी नहीं लगा और घबराहट में गाय से बचने के लिए भाग खड़ी हुई। मुझे उस वक्त इस बात का भी खयाल नहीं रहा कि दीदी भी मेरे साथ हैं। मैं तो भागती ही गई और रुकी तब, जब मेरे कानों में दीदी की आवाज पड़ी– 'वहीदा, रुक जा, गाय चली गई है।'मुड़कर देखा तब गाय बहुत पीछे छूट चुकी थी। मैंने राहत की सांस ली, लेकिन दीदी को देख शरमा गई अपने इस मामूली डर पर। दीदी ने कहा,'गाय को तो कभी का ढेले मारकर मैंने भगा दिया।'

**वह अजीज दोस्त**

पांचवें स्टैंडर्ड में पढ़ती थी और आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में घर था मेरा। ऐसा लगता था कि सारे महल्ले में सिर्फ मेरा ही घर चूहों की सेहत के लायक है। सारे चूहों की जमात वहीं इकट्ठी हो गई थी। ...एक दिन मैंने एक चूहे को जिंदा ही पकड़ लिया और एक छोटे-से घुंघरू को तार में पिरो उसके गले में बांध उसे छोड़ दिया। फिर तो संगीत का हल्का-सा स्वर हर वक्त घर में गूंजता रहता। जब भी वह इधर-उधर उछल कूद मचाता, उसके गले में बंधा घुंघरू झनक उठता। सबसे अजीब बात यह कि उसके बाद एक भी चूहा दिखायी नहीं पड़ा।

शायद उस चूहे के गले में बंधे घुंघरू की आवाज से अन्य चूहों ने अपना वतन बदल दिया। पर, अब दूसरी मुसीबत शुरू हुई कि वह चूहा घर का मालिक बन बैठा। दिन-रात सारे घर में हंगामा मचाता रहता था। धीरे-धीरे हम लोग भी उसे पसंद करने लगे।

**कविता**

## खिन्न

हार जाने के बाद नेता ने
अपने एक वक्तव्य में कहा था–
'प्रौढ़ शिक्षा से
इतनी जाग्रति आ जाएगी
पता नहीं था।'

## टिकट

हारे हुए नेता से–
बोला कंडक्टर, 'टिकट तो ले लो।'
पस्त होकर बोले वे–
'टिकट क्या करना है हमें
अब कौन-सा चुनाव लड़ना है।'

## विसर्जन

चलते-चलते वे कह गए
'हमने–करोड़ों रुपया
पानी की तरह बहाया
और फिर उसी बाढ़ में बह गए।'

- डॉ. सरोजनी प्रीतम

**आलेख**

# मैं बागी बकरी के कारण बना

कुछ कार्यवश मैं महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा गया था। यह आश्रम आज डाकुओं के आत्मसमर्पण का ऐतिहासिक स्थल बन चुका है। शाम का समय था। मैं कुछ सामान लेकर आश्रम में पहुंचा, तो वहां मैंने दो व्यक्तियों को टहलते देखा, जिनमें एक था मानसिंह गिरोह का डरेलाल, दूसरा सोबरन सिंह, जो मलखान सिंह के गिरोह का था। रात का खाना खाने के बाद बातचीत के दौरान मैंने अचानक सोबरन से प्रश्न किया कि तुम बागी क्यों बने? यह प्रश्न सुनते ही सोबरन बैठ गया और बोला,'मेरी शादी हुए अभी कुछ महीने ही हुए थे कि मेरे दो साले ससुर से अलग हो गए। मेरे ससुर ने मुझसे कहा कि सोबरन तुम मेरे पास चले आओ, मेरा और तो अब कोई नहीं रहा। जो थोड़ी बहुत जमीन है, तुम उसे बनाओ और जैसे बन पड़े, मुझे भी दो रोटी देते रहो। मैंने सोचा कि जब ये मुझे अपना समझ रहे हैं, तब मेरा भी इनके प्रति कर्तव्य बनता है। यही सोच मैं अपनी ससुराल चला गया और वहां मेहनत कर अच्छी रोजी-रोटी कमाने लगा।

उस गांव में मेरी दोस्ती एक छह-फुटे सुंदर नौजवान पहलवान से हो गई। दोस्ती भी ऐसी कि हम एक-दूसरे को देखे बिना रोटी तक नहीं खा सकते थे। हम दोनों रात को घूमने निकल जाते और कभी दांव मार कर किसी के बैल खोल लाते, किसी की बकरी। एक दिन हमारे गांव के एक आदमी की बकरी का बच्चा जंगल में खो गया। उसने यह सोचकर तसल्ली कर ली कि जंगल में किसी जानवर ने मार दिया होगा। तीन दिन बाद मैं और पहलवान जंगल में घूमने निकले तो हमें 'में-मे' की आवाज सुनाई दी। मैंने पहलवान से कहा, 'अरे यह तो हमारे गांव के आदमी की बकरी का बच्चा है। चलो, उसे वापस कर दें।'

पर पहलवान बोला,'चुपकर यार' और फिर इशारे से बोला,'मारकर खा जाएंगे।'

मैंने कहा,'भई मैं तो नहीं खाऊंगा।' तब वह बोला, 'तूने अभी पांच रुपये भी नहीं दिए।' वह आदमी बोला,'कैसी बात करता है! मैंने तो उसी दिन पहलवान को पैसे दे दिए थे।' मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैं सीधे पहलवान के पास गया और उसे उस गांव का किस्सा सुना दिया। अब पहलवान हंसकर बोला, 'क्या बात हो गई, मैं तुझे पैसे दे दूंगा!' किंतु उसने पैसे नहीं दिए। मैंने मजाक में ही कहा, 'मैं यह सारा किस्सा उस आदमी को बता दूंगा, जिसकी बकरी तूने बेची है।' यह सुन पहलवान ने कहा कि अगर यह बात है, तो मैं भी तेरी चोरी बता दूंगा, जो तूने फलां के खेत से की है। बात आई-गई हो गई और मैं भी भूल गया। लेकिन उसने मेरी चोरी की बात उस व्यक्ति को बता दी। उसने मेरे खिलाफ पंचायत बैठा दी। मुझ पर जुर्माना हो गया।

मेरे मन में बदले की भावना प्रबल हो गई। अब मैं उसे मारने का अवसर ढूंढ़ने लगा। ...अवसर देखकर मैंने भाला उसके पेट में भोंक दिया। लंगोट पहने हाथ में भाला लिए मैं वहां से भाग निकला। मैं भागता हुआ नजदीक के दूसरे गांव में पहुंचा। दुर्भाग्य से वहां पर भी किसी का कत्ल हुआ था, इसलिए वहां पुलिस का पहरा था। एक पुलिसवाले ने मुझे रुकने का आदेश दिया। उसे देखते ही मैंने भाला पीछे की ओर फेंक दिया और उसके पूछने पर बताया कि मैं बाबू के घर आया हूं। उसने संदेह से मेरी ओर मेरी बात पर विश्वास हो गया और उसने मुझे जाने को कहा। वहां से भागता हुआ मैं एक दूसरे गांव में चला गया। उस गांव में हमारे गांव की एक लड़की ब्याही थी, उसी के घर पर चला गया। पति-पत्नी बोले, 'सोबरन, ऐसे तू कहां भटकता फिरेगा! तू किसी गिरोह में मिल जा। एक दिन रात को सुज्जा का गिरोह हमारे यहां आ धमका। मेरी उस बहन ने सुज्जा को मेरी सारी परिस्थिति बताई और मेरा हाथ उसके हाथ में दे दिया। मैं उसके साथ चला गया। एक दिन पुलिस की मुठभेड़ में सुज्जा घायल हो गया और बाकी साथी भाग खड़े हुए। मैं अकेला ही उसके पास खड़ा था। सुज्जा बोले,'सोबरन, मुझे घायल अवस्था में छोड़कर मत भागना, अगर पुलिस ने मुझे पकड़ लिया तो तड़पा-तड़पाकर मार देगी। इसलिए तू मुझे गोली मार दे। मैंने घबराकर बड़ी मुश्किल से मुंह पीछे किए हुए ही सुज्जा के दिल पर गोली मार दी और वहां से भाग सड़ा हुआ। उस दिन के बाद मैं मलखान के गिरोह में चला गया और अंत यानी समर्पण के समय तक उसके साथ रहा।

...जेल से लौटकर कुछ दिन घर रहने बाद मैं श्योपुर गांधी आश्रम चला आया। यहीं पर खेतों में काम कर रहा हूं। अब तो मारपीट की जिंदगी से दिल भर गया है। जी चाहता है कि बस आश्रम में काम करता रहूं, जिससे सूखी

कोई नई चीजें नहीं सीख सकता, क्योंकि अब उम्र नहीं है। वर्कआउट से दूरी बना ली है, क्योंकि उम्र बढ़ गई है। क्या आप भी ऐसा ही सोचने लगे हैं? अगर आपको भी बात-बात पर अपनी बढ़ती उम्र का हवाला देने की आदत हो गई है, तो जरूरत है इन कुछ मिथकों को तोड़ने की, जो डर बन कर आपके मन में बैठ गए हैं। बता रही हैं श्रुति भट्ट

# इस भ्रम से निकलिए बाहर

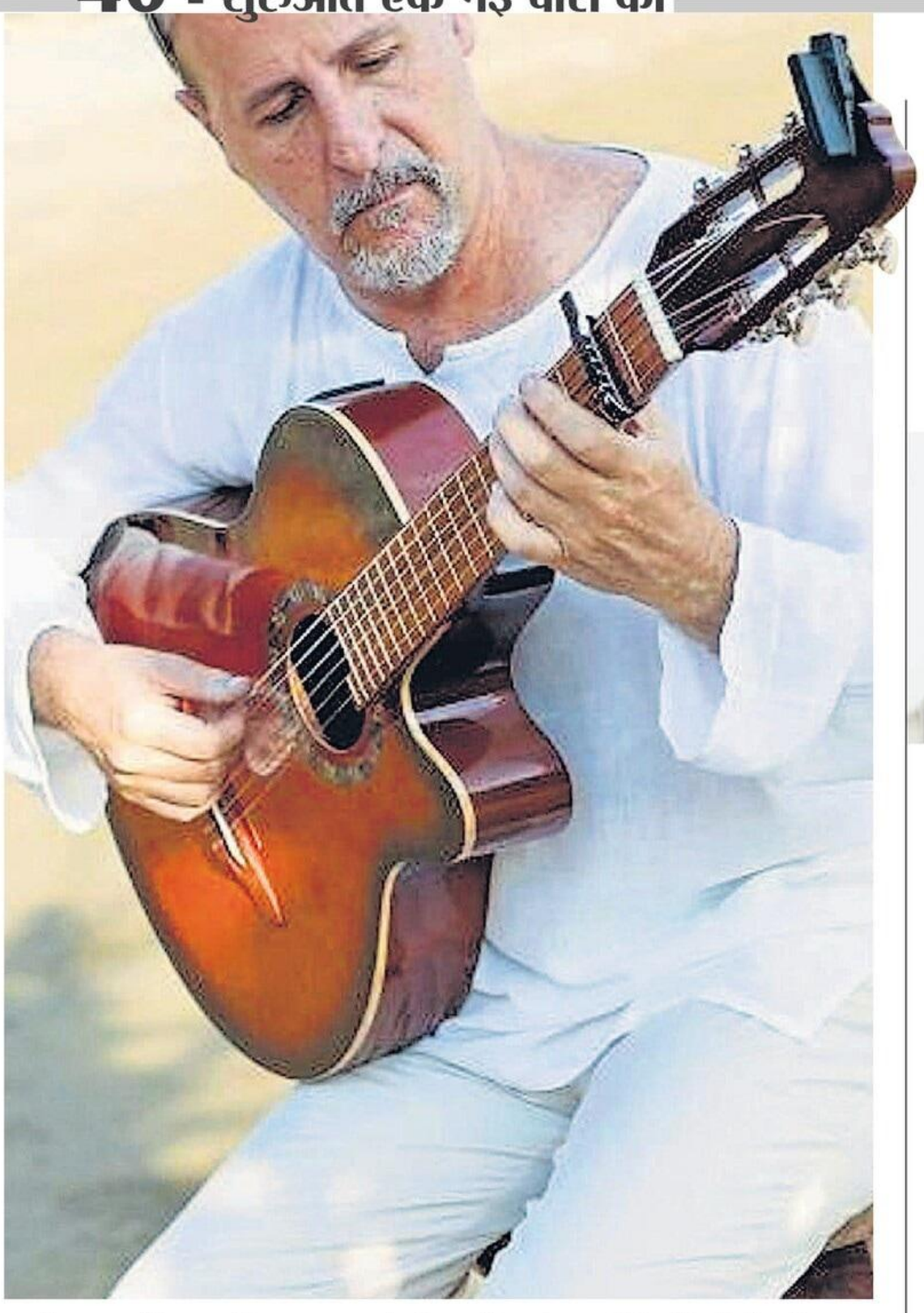

उम्र बढ़ने का मतलब यह नहीं है कि आप अपने सपनों को छोड़कर एक रॉकिंग चेयर पर चले जाएं। जो लोग ऐसा सोचते हैं, उनको समझना चाहिए कि जीवन का यह समय उनके लिए समृद्ध अनुभवों, नए रोमांच और अंतहीन संभावनाओं का समय हो सकता है। समाजशास्त्री प्रतीक श्रीवास्तव कहते हैं कि किसी भी उम्र में स्वस्थ रहना, अच्छा महसूस करना खास जरूरी है। ये विचार ही आपको बढ़ती उम्र के साथ होने वाले बदलावों से निपटने में मदद कर सकते हैं। इसलिए उम्र बढ़ने के बारे में जो कुछ भ्रम या मिथक हैं, उन पर विश्वास करना बंद कर दें जैसे -

## नई चीजें नहीं सीख सकते

कई लोग मानते हैं कि उम्र बढ़ने के साथ नई चीजें सीखने का समय खत्म हो जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि जीवन भर संज्ञानात्मक विकास चलता रहता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन एजिंग के शोध से पता चलता है कि वृद्ध वयस्क वास्तव में नई चीजें सीख सकते हैं, नई यादें बना सकते हैं व अपनी भाषा-कौशल में सुधार कर सकते हैं। बस, उन्हें थोड़ा और समय चाहिए होगा। लेकिन एक बार जब किसी चीज को समझ लेते हैं, तो वो युवाओं की तरह ही अच्छा प्रदर्शन करते हैं। वास्तव में, वृद्ध वयस्कों के पास सालों के अनुभव से बड़ी शब्दावली और अधिक ज्ञान होता है, जो साबित करता है कि वे नई चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। फिर चाहे वह कुकिंग क्लास हो या नया बोर्ड गेम खेलना या फिर एक नई भाषा सीखना हो। इसलिए कभी नहीं सोचें कि आपके अंदर सीखने की क्षमता धीमी है। याद रखें कि अगर आप खुद पर विश्वास करते हैं, तो आप बदलाव के लिए एक सकारात्मक माहौल बना रहे हैं, चाहे आपकी उम्र कुछ भी हो।

## बढ़ती उम्र, वर्कआउट से दूरी

यह सही है कि एक उम्र के बाद शरीर युवाओं के मुकाबले कमजोर हो जाता है, परंतु इसका दूसरा पक्ष यह है कि अगर शरीर स्वस्थ है, तो उम्र का कोई असर नहीं होता। शोध भी बताते हैं कि 65 से अधिक उम्र के लोगों को रोजाना आधे से एक घंटे का व्यायाम, हर सप्ताह दो दिन की स्ट्रेंथ ट्रेनिंग करनी चाहिए विशेषज्ञ की सलाह पर। दरअसल, नियमित वर्कआउट करने से एक लक्ष्य भी मिलता है। शोधों में भी व्यायाम, विशेष रूप से टेस्टोस्टेरोन हार्मोन के स्तर को बढ़ाने, हड्डियों के घनत्व को बढ़ाने व ऑस्टियोपोरोसिस की समस्या को रोकने में कारगर साबित हुआ है। वास्तव में सक्रिय रहना किसी भी व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए बहुत अच्छा हो सकता है। इसलिए अपने जरूरत के हिसाब से व्यायाम करते रहना चाहिए।

## बुजुर्गों को चाहिए कम नींद

हालांकि उम्रदराज लोगों को युवाओं की तुलना में जल्दी सोने व जल्दी उठने की संभावना होती है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन एजिंग का कहना है कि बड़ी उम्र के लोगों को हर रात 7-9 घंटे की नींद की जरूरत होती है, जो सभी वयस्कों के समान है। अगर आप पर्याप्त नींद नहीं ले रहे हैं, तो इससे थकान महसूस हो सकती है।

## ये उम्र है आराम की

'नौकरी से सेवानिवृत्त होकर बस आराम करना है।' ऐसा सोचने वालों को शायद पता नहीं कि व्यस्त रहने का संबंध लंबी उम्र और बेहतर गुणवत्ता वाले जीवन से होता है। फिर भले ही अपने नाती-पोतों के साथ खेलने की बात हो या दोस्तों के साथ समय बिताने की हो या फिर किसी दूसरी एक्टिविटी में व्यस्त रहने की। अगर आपको अपने जीवन को बेहतर बनाना है, तो काम से अवकाश के बाद अपने वर्तमान दिनचर्या को भी बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए।

## उम्र के अनुसार दिखना चाहिए

'अगर बहुत लंबे समय से किसी खास तरह के कपड़े पहनने के आदी हैं और आपको प्रयोग करने की इच्छा है, तो आप ऐसा जरूर करें। यह उबाऊ होने से कहीं बेहतर है।' यह कहना है ग्रूमिंग एक्सपर्ट नम्रता गुलाटी का। वह कहती हैं, 'अगर आप टैटू बनवाना चाहते हैं, अपने बालों को रंगना चाहते हैं या एक नया हेयरकट लेना चाहते हैं। इसके लिए आपको किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है। यह बदलाव वास्तव में आपको अच्छा ही महसूस कराएगा।

## कम उम्र के दोस्त नहीं बनाएं

जिस तरह युवाओं को जीवन में आगे बढ़ने, प्रोत्साहन या सलाह पाने के लिए बड़े पुरुष रोल मॉडल की जरूरत होती है, वैसी ही अपने से कम उम्र के लोगों से जुड़ना भी फायदेमंद है। जैसे कि आपको जीवन के प्रति युवा दृष्टिकोण को समझने में मदद मिल सकती है। वर्तमान रुझानों से जुड़े रहना, नए दृष्टिकोण प्राप्त करना, ऊर्जा में वृद्धि और सीखने के अवसर के रूप आप अपनी इस दोस्ती को भुना सकते है। इससे आपको तकनीक की नई समझ भी आएगी, जो इस उम्र में जरूरी है।

## ऑर्थराइटिस तो होगा ही

यह सच है कि उम्र बढ़ने के साथ ऑस्टियो-आर्थराइटिस के होने की संभावना बढ़ जाती है। लेकिन ऐसा सबके साथ हो, जरूरी नहीं है। शोधों की मानें तो 65 साल से अधिक उम्र के केवल आधे लोग ही ऑस्टियो-ऑर्थराइटिस से पीड़ित हैं और अगर आपको यह हो जाता है, तो आप इसे कम करने के लिए कई उपाय कर सकते हैं। नियमित व्यायाम करना, जीवनशैली का सही रखना जोड़ों के दर्द से बचने का बेहतर तरीका हो सकता है।

## डिमेंशिया होना स्वाभाविक है

बहुत से लोग सोचते हैं कि डिमेंशिया सिर्फ बुढ़ापे का हिस्सा है। लेकिन यह पूरी तरह से एक मिथक है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन एजिंग के अनुसार, 85 और उससे अधिक आयु के लगभग एक तिहाई लोगों को ही किसी न किसी तरह का डिमेंशिया हो सकता है। इसका मतलब है कि दो-तिहाई लोगों को यह नहीं होगा। देखें तो बहुत से लोग 90 या उससे अधिक उम्र तक भी दिमागी रूप से फिट रहते हैं। अगर आप भी दिमागी मजबूती चाहते हैं, तो अपने मस्तिष्क को नई गतिविधियों के साथ जोड़ें। पढ़ना, पेंटिंग करना, सुडोकू या शतरंज जैसे खेल खेलना, संगीत सुनना, म्यूजिकल स्ट्रमेंट बजाना जैसी रुचियों को आगे बढ़ाना दिमाग को सक्रिय रख सकता है।

## दिल चाहता है

गीतांजलि शर्मा
रिलेशनशिप कोच

बातें पति-पत्नी के रिश्ते की हों या फिर अन्य रिश्तों की। रिश्तों से जुड़ी हर किसी के पास कोई न कोई उलझन होती ही है। आपके ऐसे ही सवालों के जवाब देंगी हमारी विशेषज्ञ

● मेरी लव मैरिज है। शादी को 15 साल हो गए है, फिर भी मेरे ससुराल वालों का रवैया मेरे प्रति बदला नहीं है। उन्हें लगता है कि मैंने उनके बेटे, जो कि मेरे पति हैं, पर कोई जादू कर दिया है, इसलिए वो सिर्फ मेरी ही सुनते हैं। घर में कोई भी आयोजन होता है, उसमें वो सिर्फ मेरे पति को ही बुलाते हैं, मुझे या मेरे बच्चों को नहीं। इस बारे में पति से बोलती हूं, तो वो मुझे इसमें ज्यादा दखल न देने की सलाह देते हैं। ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

-संचिता

देखिए, हमारे यहां शादियां दो परिवारों के बीच होती हैं। जब लव मैरिज होती है, तो अकसर लड़की लड़के की पसंद की होती है, वो घरवालों की पसंद की नहीं होती। इस शादी में उनसे राय नहीं ली जाती। एक लड़की को लेकर जो उनके पसंद नापसंद हैं, उन्हें ध्यान में नहीं रखा जाता, तो शुरू से ही घरवाले खुद को अलग-थलग महसूस करने लगते हैं। उन्हें लगता है कि शादी जैसे फैसले में उनकी राय नहीं ली गई। इसके बाद जब कभी ऐसी परिस्थिति आती है, जहां पति को पत्नी या मां-बाप के राय में से किसी एक को चुनना पड़ता है और वह इस कठिन परिस्थिति में बीवी के लिए कभी खड़ा होता है, तो घरवालों की जो सोच है, वह और पुख्ता हो जाती है कि जरूर लड़की ने उस पर जादू कर दिया है। जो बेटा शादी से पहले तक हमारे कहने पर चलता था, अब वह बीवी से राय लेने लगा है। शायद इस संघर्ष से बचने के लिए कि रोज-रोज आमना सामना ना हो और ऐसी स्थिति से ना बने, उन्होंने आपको अपने परिवार से दूर रख रहे हों। लेकिन यह आदर्श व स्थायी समाधान नहीं है। क्योंकि अगर मां-बाप और बीवी के बीच में अच्छे संबंध नहीं हैं, तो पति उससे जरूर प्रभावित होंगे। एक अफसोस हमेशा रहेगा और यह हर लड़के में रहता है, क्योंकि कोई भी लड़का अपने परिवार को टूटते हुए नहीं देखना चाहता। ऐसे टूटे हुए परिवार के बच्चे भी प्रभावित होते हैं। अगर यही चीज बच्चे देख रहे हैं, तो बड़े होकर शायद उन्हें भी यही लगे कि कहीं पर कोई समस्या आए, तो परिवार से अलग होना ही सही तरीका है। हो सकता है बच्चे भी बड़े होकर आपसे दूर होने का फैसला ले लें, जब कभी उनकी जिंदगी में ऐसी स्थिति आए तब। तो यह कोई सही समाधान नहीं है। सबसे पहले तो अपने पति से इस बारे में खुलकर बात करें कि आपको यह व्यवस्था सही नहीं लग रहा। अपनी भावना जाहिर करें कि आप भी परिवार के साथ घुल-मिल कर रहना चाहती हैं। पति को समझाएं कि अगर आगे से कोई चीज होती है, तो पत्नी की तरफ लेने के बजाय तटस्थ रवैया रखें या जहां जरूरी हो, दोनों की वह थोड़ी-थोड़ी सुनें या शुरू में कोशिश करें कि वह अपने मां-बाप की ज्यादा सुनें। इससे उन्हें लगेगा कि हमारा बेटा जो है, वह हमें महत्व दे रहा है। इसके साथ ही आप अपनी तरफ से भी कुछ प्रयास कर सकती हैं। जैसे कि आप जाकर उनसे मिलें, अपनी भावनाओं को व्यक्त करें कि आप कैसा महसूस करती हैं। जानने की कोशिश करें कि आखिर कौन-सी चीज हैं, जो उन्हें परेशान कर रही है। अगर कोई गलतफहमी है, तो उसे हटाने की कोशिश करें। फोन पर बात करना शुरू करें। उनकी जिंदगी में रुचि दिखाना शुरू करें। उनकी पसंद-नापसंद को जानें। कभी-कभी आप उन्हें अपने घर खाने के लिए बुला सकती हैं। बच्चों को भी घुलने-मिलने दें। इस तरह छोटे-छोटे कदम से आप अपने रिश्ते में सुधार कर सकती हैं।

फुरसत-आप भी अपने सवाल हमें यहां दिए गए ई-मेल आईडी पर लिख कर भेज सकते हैं। साथ में अपना नाम और पता लिखना न भूलें। हमारी ईमेल आईडी है: hindustanfursat@gmail.com

## ट्रेंड

रिनग्धा सिंह, स्टाइलिस्ट

# धोती के निराले अंदाज



**शादी** की हर पार्टी में कुर्ता और चूड़ीदार पहन कर ऊब चुके हैं, तो अब अपनी अलमारी में शामिल कीजिए धोती। यहां पुराने जमाने की उस सफेद धोती की बात नहीं हो रही, बल्कि फैशनेबल धोती की बात है। जिसमें प्री ड्रेप्ड धोती से लेकर ब्रोकेड धोती तक, पार्टी के पहनावे में शामिल हो चुकी हैं। अगर सेलेब्स की बात करें, तो कई मौकों पर दिलजीत दोसांझ, जॉन अब्राहम, रितेश देशमुख, सैफ अली खान आदि धोती के स्टाइल में दिख चुके हैं। जैसे हाल ही में सैफ अली खान पारंपरिक बंगाली मयूरपुछा धोती में नजर आए। आप भी धोती पहनना चाहते हैं, तो ये टिप्स आजमाएं-

- यदि आप धोती के साथ फ्यूजन लुक चाहते हैं, तो इसे ब्लेजर और बूट्स के साथ पहनें। आपका यह अंदाज पारंपरिक और समकालीन के बीच एक सही संतुलन बनाएगा और किसी भी शादी में सबका ध्यान आकर्षित करेगा।
- धोती पहनना झंझट भरा काम लगता है, तो प्री ड्रेप्ड धोती पहनें। आपको पारंपरिक धोती पहनना पसंद है, तो इसे अंगरखा शैली के कुर्ते के साथ पहनें।
- इसके साथ मोजरी, लोफर्स या कोल्हापुरी चप्पल पहनें।
- मॉडर्न अंदाज चाहिए, तो धोती के ऊपर कमरबंद, बेल्ट या चेन पहनें।
- एक स्टाइलिश स्टोल या शॉल के साथ अपने लुक को निखार सकते हैं।
- किसी खूबसूरत साड़ी को धोती का स्टाइल देकर भी

## आपका पैसा

बैंक से लिया हुआ कर्ज चुकाना ज्यादा फायदेमंद है या निवेश करना। इस बारे में सब अपनी-अपनी सलाहें दे सकते हैं। लेकिन किस स्थिति में कौन-सा विकल्प आपके लिए बेहतर हो सकता है, इस पर विशेषज्ञ की क्या है राय, बता रहे हैं तोयज कुमार सिंह

# लोन जल्दी चुकाना सही है या निवेश करना?

**एक** मल्टीनेशनल कंपनी में काम करने वाले अर्जुन ने एक फ्लैट खरीदा और इसके लिए 30 लाख रुपये का लोन लिया। यह लोन उनको 10 साल में चुकाना है। इसी बीच एक पारिवारिक संपत्ति से उनको 10 लाख रुपये मिले। ज्यादातर लोग अर्जुन को सलाह दे रहे हैं कि वह फटाफट लोग चुकता कर लें। लेकिन क्या सचमुच यही फायदे का सौदा है? या फिर उनको अपना पैसा कहीं निवेश कर देना चाहिए? इन दोनों विकल्पों में से किसी एक को चुनने से पहले ये जानें

## लोन चुकाने के लिए क्यों सोचें

1. **ब्याज दर और समय का प्रभाव:** इस हालात में सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि लोन पर लगने वाले ब्याज का बोझ आपके ऊपर कितना पड़ रहा है। उदाहरण के तौर पर, यदि लोन पर नौ फीसदी ब्याज दर है और यह अगले 10 साल तक चलेगा, तो यह आपके लिए एक बड़ा वित्तीय भार बन सकता है। इस स्थिति में अर्जुन को अपने पैसे लोन का हिस्सा चुकाने में लगाने चाहिए। इससे वे अपनी ब्याज की राशि को कम कर सकते हैं और साथ ही कुल लोन को घटा सकते हैं।
2. **प्री-पेमेंट से बचत:** अकसर लोन का एक हिस्सा पहले चुकाने से ईएमआई कम हो जाती है या लोन की अवधि भी घट सकती है। ऐसे में अर्जुन को यह समझना होगा कि उनके बैंक में प्री-पेमेंट के क्या नियम हैं और क्या इस पर कोई जुर्माना लगता है। यदि जुर्माना कम है या नहीं है, तो उनके लिए यह एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
3. **टैक्स लाभ का आकलन:** पुराने टैक्स सिस्टम के तहत, एजुकेशन लोन के ब्याज पर 80ईईए के तहत टैक्स छूट मिलती है। अगर अर्जुन प्री-पेमेंट करते हैं, तो वे इस टैक्स छूट का लाभ नहीं उठा पाएंगे। इसलिए, लोन चुकाने से पहले उन्हें यह समझना होगा कि टैक्स लाभ और प्री-पेमेंट से होने वाली बचत में कौन सा विकल्प बेहतर है।

## निवेश के लिए क्यों सोचें

1. **कम उम्र में निवेश, बेहतर रिटर्न:** माना जाता है कि 20 की उम्र, निवेश शुरू करने का सबसे अच्छा समय है। चक्रवृद्धि ब्याज का नियम बताता है कि जितनी जल्दी निवेश शुरू होगा, उतना ही अधिक रिटर्न मिलेगा। इस स्थिति में अर्जुन इस बोनस का इस्तेमाल म्यूचुअल फंड, स्टॉक मार्केट या अन्य निवेश योजनाओं में करते हैं, तो लंबे समय में यह निवेश उन्हें बड़ी बचत दे सकता है।
2. **भविष्य की वित्तीय स्वतंत्रता:** निवेश का एक बड़ा फायदा यह है कि यह आपको भविष्य में वित्तीय स्वतंत्रता देगा। शादी, घर खरीदने या बच्चों की पढ़ाई जैसे बड़े खर्चों के लिए यह निवेश मददगार साबित हो सकता है। अगर अर्जुन अभी से निवेश की आदत डालते हैं, तो वे लंबे समय में अपने लक्ष्यों को आसानी से पा सकते हैं।



चार्टर्ड एकाउंटेंट रवि शंकर गुप्ता के अनुसार, अर्जुन के मामले में, दोनों विकल्पों को संतुलित रूप

## समझदारी से निर्णय लेना

प्री-पेमेंट के लिए इस्तेमाल

या पीपीएफ में निवेश किया जा

फंड कम से कम 6-12 महीने के खर्च को कवर करने के लिए होना चाहिए। हालांकि अगर आप

फिल्म 'पुष्पा 2' से पूरी इंडस्ट्री में धूम मचानेवाले दक्षिण सिनेमा के स्टार अल्लू अर्जुन को आज बच्चा-बच्चा जानने लगा है। पर, शायद आप नहीं जानते कि दुनिया भर में अपने अभिनय से डंका मचाने का ये सपना अर्जुन ने आज से नहीं, बल्कि कई साल पहले देखा था। एक हालिया बातचीत में उन्होंने क्या कहा इस बारे में, जानिए उन्हीं की जुबानी

# पूरा हुआ अल्लू अर्जुन का सपना

पुष्पा राज इन दिनों स्क्रीन पर है। करोड़ों कमाने के बाद इस फिल्म में काम करनेवाले दक्षिण सिनेमा के हीरो अल्लू अर्जुन की भी खूब चर्चा हो रही है। और वह इस बात से खुश हैं कि फिल्म 'पुष्पा' से उनकी पहचान पूरे देश में होने लगी है। इस तरह उनका सपना पूरा भी हो रहा है। दरअसल, अल्लू ने एक बातचीत में कुबूल किया कि वो हमेशा से ऐसी कोई फिल्म करना चाहते थे, जिसे साउथ में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में प्यार मिले। बकौल अल्लू, 'मैं हमेशा से दक्षिण फिल्मों का दीवाना रहा हूं और जिस तरह से लोगों ने हमें प्यार दिया है, उससे तो हमारा झुकाव फिल्मों में अपने आप बनता चला गया। लेकिन पिछले कुछ सालों से मैं ऐसी कोई कहानी चाह रहा था, जो पूरे भारत को प्रभावित करे और उसे न सिर्फ दक्षिण, बल्कि हर भाषा में लोगों को पसंद आए। अब 'पुष्पा 2' को मिल रहे प्यार से मेरा वो सपना

पूरा हो गया है।' दरअसल, दक्षिण सिनेमा में अल्लू अर्जुन उन सितारों में से एक हैं, जिनके करोड़ों फैंस हैं। उनके कुछ फैंस के लिए तो वो भगवान से कम नहीं हैं। 'पुष्पा' के बाद 'पुष्पा 2' को मिल रहे प्यार से इसका अंदाजा आप लगा ही सकते हैं।

## और वो एक्शन वायरल हो गया

इस फिल्म का एक एक्शन जो खूब वायरल हुआ, असल में वो स्क्रिप्ट का हिस्सा था नहीं। इस पर बात करते हुए अल्लू कहते हैं, 'आपको जानकर हैरानी होगी कि मेरा जो हाथ का एक्शन था 'पुष्पा झुकेगा नहीं..' वो स्क्रिप्ट में लिखा नहीं गया था। मैंने ऐसे ही एक दिन शूटिंग के समय अपनी दाढ़ी में हाथ फेरते हुए वह किया, क्योंकि उस समय मुझे काफी गर्मी लग रही थी। फौरन डायरेक्टर ने उसे फिल्म में शामिल कर दिया। पहले उनकी बात पर मुझे यकीन नहीं हो रहा था। मुझे लगा इसमें क्या खास है। लेकिन जब वह वायरल हुआ, तो मुझे समझ में आ गया कि डायरेक्टर की नजर सबसे पारखी होती है।'

## अल्लू ने उठाई जिम्मेदारी

अल्लू अर्जुन एक ऐसे परिवार से आते हैं, जहां पर सभी सुपरस्टार हैं और वह भी सालों से। इस पर वह कहते हैं, 'मैंने बचपन से ही फैंस का प्यार देखा है। इसलिए जब कोई मुझसे कहता है कि फैंस की वजह से क्या मैं ग्रे किरदार नहीं करता, तो मैं उनसे कहता हूं कि मेरे काम से लोग प्यार करते हैं और मेरे फैंस बनते हैं। इसलिए मैं कुछ भी करूं, उन्हें अच्छा ही लगेगा।' साथ ही अल्लू ने यह भी माना कि वह उस तरह के किरदार करते हैं, जो एक कलाकार के रूप में उन्हें चुनौती दे। वह एक ही तरह का काम नहीं करना चाहते।

परिवार के स्टारडम और उससे मिले फायदे के बारे में वह कहते हैं, 'मैंने अपने परिवार के सितारों से विनम्र रहना सीखा है। जहां तक फायदे की बात है, तो मैंने उनसे केवल मेहनत करनेवाला गुण लिया है।'

## हिंदी फिल्में पसंद हैं

जहां दक्षिण फिल्म के बाकी कलाकार साउथ फिल्मों को तवज्जो देते हैं, वहीं अल्लू कहते हैं, 'मुझे हमेशा से ही हिंदी फिल्में पसंद आती रही हैं। मैं उनका बहुत बड़ा फैन रहा हूं। मैं हर तरह की फिल्में करना चाहता हूं। मुझे भाषा से कोई खास फर्क नहीं पड़ता।'

आजकल बॉलीवुड के सभी कलाकार दक्षिण सिनेमा की लोकप्रियता देख वहां की तरफ रुख कर रहे हैं। इस पर वह कहते हैं, 'मुझे लगता है कि जब आप कलाकार होते हैं और आपको कोई अच्छी कहानी दिखती है, तो आप उससे जुड़ना चाहते हैं। चाहे उसकी भाषा जो हो।' आपको बता दें कि अल्लू हिंदी भी अच्छा बोलते हैं। उनका कहना है कि वह हिंदी में फटाफट बोल नहीं पाते, लेकिन जब कोई उनके सामने अच्छी हिंदी बोलता है, तो वह उससे काफी प्रभावित होते हैं।

नीलम कोठारी बडोनी

## ओटीटी में नया क्या

### डिस्पैच

यह एक क्राइम थ्रिलर फिल्म है, जिसकी कहानी भारत के सबसे बड़े घोटालों में से एक जीडीआर 2जी स्पेक्ट्रम केस, जो काफी विवादों में रहा, पर केंद्रित है। जिसमें अंडरवर्ल्ड की झलक भी आपको दिखाई देगी। इसमें मनोज बाजपेयी एक ईमानदार और निडर पत्रकार की भूमिका में हैं, जो इस घोटाले का पर्दाफाश करते दिखेंगे। आखिर 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला क्या था, वह क्यों राजनीति विवाद की वजह बना, इन तमाम सवालों को जानने की उत्सुकता है, तो यह फिल्म शायद आपको पसंद आएगी।

कहां देखें: जी 5
कलाकार: मनोज बाजपेयी, शहाना गोस्वामी, पार्वती सहगल, अर्चिता अग्रवाल, आनंद एलकुंटे, ऋजु बजाज, पूरनेंदु भट्टाचार्य, वीना मेहता आदि।
निर्देशन: कन्नू बहल

### मिसमैच्ड 3

अगर आप कोई रोमांटिक ड्रामा कंटेंट देखना चाहते हैं और मिसमैच्ड सिरीज के फैन हैं, तो इसका तीसरा सीजन आप इस सप्ताह देख सकते हैं। इस सिरीज में प्राजक्ता कोली और रोहित सराफ हैं और इसकी कहानी इन दोनों के ही आस-पास ही घूमती है। इस सिरीज के पहले दो सीजन बहुत पसंद किए गए थे, अब तीसरे सीजन में देखना होगा कि मुख्य किरदारों के रिश्ते में क्या नया मोड़ आता है।

कहां देखें: नेटफ्लिक्स, कलाकार: प्राजक्ता कोली, रोहित सराफ, तारुक रैना, रणविजय सिंह, विद्या मालवडे, मुस्कान जाफरी। निर्देशन: आकर्ष खुराना

### बंदिश बैंडिट्स सीजन 2

चार साल के अंतराल के बाद बंदिश बैंडिट्स का दूसरा सीजन भी रिलीज हो चुका है। यह एक रोमांटिक म्यूजिकल ड्रामा फिल्म है। फिल्म की कहानी राधे और तमन्ना नामक दो संगीतकारों की है, जो पूरी तरह से अलग-अलग पृष्ठभूमि से आते हैं। पहले सीजन में यह कुछ गलतफहमियों के बाद अलग हो गए थे। अब देखना होगा कि इस सीजन में क्या उनके रास्ते एक हो पाते हैं, या कोई और कहानी बनेगी।

कहां देखें: अमेजन प्राइम वीडियो, कलाकार: ऋत्विक भौमिक, श्रेया चौधरी, अतुल कुलकर्णी, शीबा चड्ढा, राजेश तैलंग। निर्देशन: आनंद तिवारी

फ्लैशबैक

# नाना पाटेकर को इतना गुस्सा क्यों आता है?

नाना पाटेकर के अभिनय की तारीफ हर कोई करता है। उनके साथ काम करनेवाले निर्देशक भी मानते हैं कि नाना के होने से उनकी फिल्म का कद काफी बढ़ जाता है। फिर ऐसा क्यों होता है कि एक बार उनके साथ काम करने के बाद दोबारा निर्देशक काम नहीं करना चाहते? इस बारे में कुछ दिलचस्प बातें बता रही हैं जयंती रंगनाथन

संजय लीला भंसाली ने अपनी पहली फिल्म 1996 में 'खामोशी द म्यूजिकल' बनाई थी। इस फिल्म को लेकर वे बेहद रोमांचित थे। फिल्म की शूटिंग के दौरान पत्रकारों से मुलाकात में युवा संजय ने (उन दिनों उन्होंने अपने नाम के साथ लीला नहीं लगाया था, वे संजय भंसाली थे।) कहा था, 'ये फिल्म मेरा सपना है, मेरी जिंदगी की यात्रा है। मैंने जान कर इस फिल्म में नाना के किरदार को मूक बधिर रखा है, ताकि मैं उनके दिल की बातें एक्शन से व्यक्त करा सकूं। मुझे लगता है कई बार ज्यादा संवाद सीन की खूबसूरती को कम कर देता है।' नाना की तारीफ में उन्होंने कसीदे काढ़े थे। लेकिन जल्दी ही फिल्मी गलियारों से यह फुसफुसाहट उभरने लगी कि संजय और नाना में खटपट हो सलमान खान के काम की जमकर तारीफें हुईं। इसके बाद संजय ने कई फिल्में बनाईं, जो खूब चलीं, लेकिन कभी उन्होंने नाना पाटेकर के साथ काम नहीं किया। खामोशी द म्यूजिकल फिल्म में नाना ने मनीषा कोइराला के पिता की भूमिका निभाई थी, उन दिनों यह चर्चा थी कि उनके बीच अफेयर है। हालांकि मनीषा ने इस बात को लेकर कभी पत्रकारों से बात नहीं की। नाना ने भी मनीषा के साथ रहते हुए और अलग होने के बाद भी इस बारे में कुछ नहीं कहा।

हालांकि इस फिल्म में काम करनेवाले एक टैक्नीशियन ने पत्रकारों को यह बात बताई कि नाना गुस्सैल स्वभाव के हैं। इसी वजह से संजय भंसाली से भी उनकी नोक-झोंक होती थी। काम के मामले में दोनों एक जैसे थे, पर दोनों के तकरार की वजह भी काम ही होता था। बाद में यह खबर भी चली कि नाना के गुस्से की वजह से मनीषा उनसे अलग हुई हैं। मनीषा के एक करीबी ने यह भी बताया कि नाना इस रिश्ते को लेकर गंभीर नहीं थे, वो अपनी पत्नी को तलाक नहीं देना चाहते थे।

सालों बाद एक इंटरव्यू में नाना ने अपने गुस्सैल होने के बारे में तफ्सील से बताया, 'हां, मुझे गुस्सा आता है। पर, मेरे गुस्से की वजह गलत नहीं होती। मुझे जब लगता है कि दूसरा बंदा ठीक समय पर नहीं आ रहा या दूसरों का वक्त जाया कर रहा है, मुझे गुस्सा आता है। इस बात को लेकर मैं कई अभिनेताओं को थप्पड़ भी मार चुका हूं। मुझे काम को लेकर ढीला-ढाला रुख रखने वाले लोग सख्त नापसंद हैं।'

नाना ने यह भी माना कि ज्यादे की वजह से संजय भंसाली ने

टीवी की दुनिया

# वही किया जो करना चाहता था : करण

टीवी से लेकर फिल्मों और ओटीटी के लिए काम करनेवाले करण वाही ने शोबिज में अपने 20 साल पूरे कर लिए हैं। अपने इस सफर में प्रासंगिक बने रहने और टीवी से दूर रहनेवाली वजहों के बारे में खुलकर बात की

दिल मिल गए और चन्ना मेरेया जैसे टीवी शो के साथ 'दावत-ए-इश्क', 'हेट स्टोरी 4' जैसी फिल्में करनेवाले करण वाही को इंडस्ट्री में काम करते हुए करीब बीस साल हो चुके हैं। इस बात का जिक्र करते हुए वह कहते हैं, 'मुझे अहसास है कि मैं अपने जीवन में अधिकांश समय एक अभिनेता रहा हूं। जब मैंने बतौर अभिनेता काम करना शुरू किया था, तब मैं 18 साल का था और इस साल मैं 38 साल का हो गया हूं। मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि मैं इतने समय के बाद भी प्रासंगिक बने रहने में कामयाब रहा हूं। हालांकि मैंने यहां तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत की है। मुझे लगता है कि मैं उन भाग्यशाली लोगों में से एक हूं, जिनके प्रशंसक हर आयु वर्ग के हैं। हाल ही में मेरा एक प्रशंसक, जिससे मैं अपने करियर के शुरुआती दिनों में मिला था, अपनी 18 वर्षीय बेटी के साथ मेरे पास आया। उसकी बेटी ने मुझसे कहा कि वो मेरी बहुत बड़ी प्रशंसक है। तो मुझे काफी खुशी हुई और महसूस हुआ कि आज, प्रासंगिक होना किसी भी अन्य चीज से अधिक महत्वपूर्ण है।'

हालांकि इसके पीछे का कारण यह है कि उन्होंने कभी काम करना बंद नहीं किया और अलग-अलग तरह के काम करते रहे। फिलहाल टीवी से दूरी बना चुके करण कहते हैं, 'जब मैं अभिनय के अलावा होस्टिंग, रियलिटी शो, ओटीटी, फिल्में और बाकी सब कुछ करता था, तो लोग मुझे सब कुछ आजमाने से मना करते देते थे। सब मुझे एक काम पर फोकस करने के लिए सलाह देते थे। लेकिन यह अच्छा हुआ कि मैंने उनकी बात नहीं मानी और वही किया जो मैं करना चाहता था।'

'नेवर किस योर बेस्ट फ्रेंड' और 'रायसिंघानी बनाम रायसिंघानी' जैसी वेब सिरीज करनेवाले करण यह भी कहते हैं, 'मैं एक ऐसा अभिनेता हूं, जिसने कभी भी उच्च टीआरपीवाला शो नहीं किया है। मेरे सभी टीवी शोज में अधिकतम टीआरपी 0.6 रही है। फिर भी मुझे आश्चर्य होता है कि मेरे सिर पर किसी का हाथ है। जिससे मुझे टीवी में अच्छा काम मिलता गया।'

इसके अलावा, करण मानते हैं कि वह टीवी में और काम करना चाहते हैं, लेकिन जिस तरह का आज कंटेंट बनाया जा रहा है, वह उन्हें ज्यादा पसंद नहीं आता। वह कहते हैं, 'मैं